Fellowship
संगति या सहभागिता

संगति या सहभागिता

हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह और शान्ति में हम सब जब संगति रखते है और सहभागिता में जीवन व्यतित करते है तो कितना अच्छा लगता है। हम उस शान्ति को प्राप्त करते है जो मन और हृदयों को छूता है। हमारे प्रभु यीशु मसीह को हम अच्छी तराह से जानते है। हम उनको हमारे लिए क्रूस पर मारा गया मसीह के रूप में तथा तथा तीसरा दिन मृत्यु पर जयवन्त होकर जी उठा प्रभु के रूप में जानते है। हमारे प्रभु और उद्धारकता यीशु मसीह के द्वारा हम पिता परमेश्वर के साथ शान्ति में रहते है। हम इस बात को विश्वास करते और दूसरों को शिक्षा भी देते है। हम सब मिलकर हमारे परमेश्वर में एक है उस शान्ति के द्वारा जिसे हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमारे लिए क्रूस पर लाभ किया।; जीते है।

हम सब मिलकर हमारे प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा उनके साथ होते है,. केवल उतना ही नही, हमारे सर्व साधारण विश्वास के द्वारा कलीसिया जो उनका शरीर कहलाती है, उसमें हम सब मिलकर एक होते है। जैसे हम परमेश्वर के साथ शान्ति से रहते है कि ऐसे ही हम कलीसिया जो हमारे प्रभु यीशु का शरीर के नाम से जाने जाति है और हम परस्पर शान्ति और प्रेम से प्रभु में सम्मिलित है। जैसे प्रेरित पौलूस इफिसियों का 4 : 3 में कहते हैं, "और यत्न करो कि मेल के बन्धन में आत्मा की एकता सुरक्षित रहे।" इस आत्मा की एकता जो हमारे विच में है; अर्थात् कलीसिया में है। कलीसिया सच्चाई और पवित्रता में इस एकता और प्रभु का वचन अर्थात् सुसमाचार का प्रचार करती है। इस प्रकार हम लूथरन अधिकार के नाम से एक दृश्य कलीसिया है, हम सब मिलकर प्रेम से रहते है और सब एकजुट होकर हमारे परमेश्वर का सेवा दुनिया भर में करते है। हमारे इस संगति और एकता परमेश्वर का पवित्र और शुद्ध वचन पर आधारित है। हम किसी गलत शिक्षा का सहन और ग्रहण नहीं कर सकते है या गलत शिक्षकों का साथ हम संगति नहीं रखते है। परमेश्वर का सुसमाचार प्रचार करने के लिए और

उनका सेवा करने के लिए हम बहुत ही सतर्कता के साथ आत्मा का एकत्रीकरण केलिए एक मनों और हृदयों से दृढ़ता से खड़ा रहते है। हमारे संगति विश्वास और वचन का ऊपर आधारित है। – फिलिप्पियों 1 : 27 "केवल तुम इतना करो कि तुम्हारा आचरण मसीह के सुसमाचार के योग्य हो, जिस से चाहे मैं आकर तुम्हे देखूं अथवा दूर रहूँ, मैं तुम्हारे विषय में यही सुनूँ कि तुम एक आत्मा में स्थिर हो तथा एक मन होकर, एक साथ मिल कर सुसमाचार के विश्वास के लिए संघर्ष करते हो।" एकता जो परमेश्वर का वचन के ऊपर आधारित नही है वह सचमुच एकता नहीं है। बार-बार परमेश्वर वचन हमें एकता के बारे में शिक्षा देती है जब मसीही लोग एकजूट हो कर परमेश्वर का सेवा, आराधना या कोई भी मसीही संस्कारों का पालन करते है तब इस बात का ध्यान देना बहुत ही जरूरी है कि उनका सारे काम वचन के अनुसार हो। उनका आराधना, सेवा और सब धार्मिक संस्कारों का अवश्य वचन का ऊपर आधारित होना चाहिए जो पवित्र बाईबल शिक्षा देती है। लिखा है – "अब हे भाइयो, मैं प्रभु यीशु मसीह के नाम से तुमसे आग्रहकरता हूँ कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु तुम्हारे मन और विचारों में पूर्ण एकता हो।" – 1 कुरिन्थियों 1:10; कलीसिया में तुम्हारा एकता और संगति ठीक ठीक वचन के अनुसार ही होना चाहिए उससे कम या ज्यादा नही। हमारा शिक्षा यह है कि हम परमेश्वर का वचन का ही आदर और विश्वास करते है। जब हम परमेश्वर का सेवा, आराधना, प्रार्थना, वचन की रीति और सुसमाचार प्रचार का काम तथा धार्मिक संस्कारों का पालन करते है तो वचन के अनुसार ही करते हैं। हम गलत शिक्षाओं का सहन नही करते हैं क्योंकि हमारे परमेश्वर ने हीऐसा करने को हम से आग्रह किया है।

कोई छोटा गलत शिक्षा का भी हम सहन नही कर सकते है क्योंकि प्रेरित पौलूस ने कहा है – "थोड़ा सा ख़मीर गूंधे हुए पूरे आटे को ख़मीरा कर देता है।" – गलातियों 5 : 9. हमारे प्रभु यीशु मसीह ने हमे यह शिक्षा दी है कि हम वचन में बने रहे और गलत शिक्षाओं से सतर्क रहे और दूर रहे। जैसे हम गलत

शिक्षाओं को खण्डन करते है ऐसे ही उन लोगों का जो गलत शिक्षा देते हैं या गलत शिक्षकों का नाम से जाना जाते है।

जैसे हम गलत शिक्षाओं को हमारे कलीसियाओं में अनुमति नहीं देते ऐसे ही हम गलत शिक्षा देने वाली कलीसियाओं से और संघठनों से कोई संपर्क नही रखते है। पवित्र शास्त्र बाइबल कहती है, "अब हे भाइयों मैं तुमसे बिनती करता हूँ कि उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, उसमें जो लोग फूट और रुकावट डालते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो। क्योंकि ये मनुष्य हमारे प्रभु यीशु मसीह के नहीं, परन्तु अपने पेट के दास है; और अपनी चिकनी-चपड़ी बातों से सीधे-सादे लोगों को बहका देते हैं।" – रोमियों 16 : 17-18, फिर "परन्तु उन लोगों के मध्य झूटे नबी भी उठ खड़े हुए जैसा कि तुम्हारे मध्य बी झूठे उपदेशक होंगे जो गुप्त रूप से घातक और विधर्मी शिक्षा का प्रचार करेंगे, यहाँ तक कि उस स्वामी को भी अस्वीकार करेंगे जिसने उन्हें मोल लिया है, और इस प्रकार वे शीघ्र ही अपने ऊपर विनाश ले आएंगे।" – 2 पतरस 2 : 1. हम उन लोगों के साथ संगति रखते और प्रार्थना करते है जो लोग हमारे जैसे सही शिक्षाओं पर विश्वास करते है। हम हमारे कलीसियाओं कि प्रचारकों को अन्य के कलीसियाओं में प्रचार करने अनुमति नहीं देते है जो कलीसियाएं गलत शिक्षाओं का विशावास और प्रचार करते है। हम हमारे दान और सेवा का बढाने के लिए मदत सिर्फ सही सेवकों को और सही वचन की सेवा करनेवाली कलीसियाओं को ही देते है। गलत शिक्षा को हम बढ़ने तो नहीं देते है, परन्तु रोकने कि कोशिश जरूर करते है। हम सब एक साथ परमेश्वर का वचन अध्ययन करते है और प्रभु भोज में भी एक मन और दिल और प्राण से संगती रखते है एवं हमारे विश्वास का अंगीकार एक आत्मा में करते है। हम कभी भी दूसरों कलीसियाओं के साथ प्रभु भोज नहीं लेते है। हम सब एक साथ और एक जगा पर इकट्ठा होते है, प्रभु का वचन सुनने के लिए और परमेश्वर का आराधना करने के लिए उनका हम आदर और सम्मान करते है जो पवित्र वचन को हमें सिखाते है। हम परमेश्वर वचन का बहुत आदर करते है और हर सम्भव परमेश्वर का वचन का पालन करते है।

स्मरण रखे कि क्यों हम गलत शिक्षा देने वालों के साथ संगति नहीं रखते है। यदि आप कीचड़ पानी और अच्छा पानी को एक साथ मिलाएंगे तो आपको क्या मिलेगा? कीचड़ और गन्दा पानी ही आप को मिलेगा। अब आप बोलिए आप कौनसा पानी पिएंगे? अवश्य आप शुद्द पानी ही पीना चाहेंगे। परमेश्वर का पवित्र वचन शुद्ध पानी की जैसा है जो पीने का योग्य है और स्वास्थ्य के लिए अच्छा है, परन्तु गलत शिक्षा गन्दा पानी की जैसा है जौ मनुष्य को बीमारी में डाल सकती है अन्त में मृत्यु को उत्पन्न कर सकती है। युद्ध और अच्छा साफ पानी थोड़ा-सा भी ठण्डा पानी मिलाया जाए वो गन्दा पानी में ही बदल जाएगा। ठीक ऐसे ही थोड़ा से गलत शिक्षा भी पूरे जीवन के लिए खतरनाक साबित हो सकता है।

इसलिए परमेश्वर का वचन अच्छी तरह से सिखाया जाना चाहिए। हमारा जिम्मेदारी यह है कि परमेश्वर का वचन के आधार पर क्या ठीक है और क्या ठीक नही है, क्या सही है और क्या सही नही है लोगों को बताए। हम किसी का विचार नही करते, परन्तु परमेश्वर अपनी वचन की अनुसार विचार करता है। परमेश्वर का वचन का अध्ययन करना परमेश्वर का वचन का पालन करना, विश्वास करना और आदर करना तथा आज्ञाकारी बनना हर एक मनुष्य का कर्तव्य है। गलत शिक्षा कान्सर बीमार के जैसा है, प्रेरित पौलूस कहता है। जब कान्सर बीमार किसी मनुष्य को आता है तो मृत्यु को ही उत्पन्न करता है; ठीक ऐसे ही गलत शिक्षा भी मनुष्य के लिए मरण को उत्पन्न करती है। जैसे कान्सर अच्छा स्वास्थ्य को नाश करता है ठीक ऐसा ही गलत शिक्षा भी अच्छा जीवन को नाश करती है।

हम अंत का समय में है जहाँ शैतान हमारे विश्वास का चोरी करने की कोशिश करता है। वह हमारे विश्वास का आधार परमेश्वर का वचन के बारे में गलत चालों का प्रयोग करता है। परमेश्वर का वचन पर आधारित सही विश्वास को वह नष्ट करना चाहता है। शैतान बहुत चालू है; वह हमारा दुशमन है, वह हमारे बीच में गलत शिक्षां की बीज बोता है, वह हमेशा परमेश्वर का सच्चा वचन का

विरुद्ध में कार्य करता है। हम प्रभु यीशु मसीह के नाम पर, विश्वास में दृढ़ होकर आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, इन हथियारों को धारण करके शैतान का सामना करना है। आइये परमेश्वर का वचन का अध्ययन करें, सत्य वचन को प्रचार करें। परमेश्वर का राज्य को दुनिया में स्थापन करें। बहुत लोक सच्चाई का वचन सुनकर यीशु मसीह पर विश्वार करने द्वारा अनंत जीवन का वारिश बन सके। आइये अपनी कलीसियाओं में कोई गलत शिक्षा का नहीं आनेके लिए प्रार्थना के साथ-साथ कड़ी मेहनत करें। **हे प्रेमी प्रभु यीशु मसीह, हमारे उद्धारकर्ता अपनी वचन हमारी अन्दर रक्षा कर। अब हमारे परमेश्वर जो भरोसा और तसहली का परमेश्वर है आप सभी को एक मन और आत्मा होने के लिए एक दूसरे को समझ ने का दिल दे। "अब परमेश्वर जो धैर्य एवं प्रोत्साहन देता है, तुम्हें ऐसा वरदान दे कि तुम मसीह यीश के अनुसार आपस में एक मन रहो, तुम एकचित्त और एक स्वर होकर हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता परमेश्वर की स्तुति करो।" – रोमियों – 15 : 5-6**

"आमीन"